P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-11* February- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

उच्च माध्यमिक स्तर के एकल एवं सह शिक्षण संस्थाओं मे अध्ययनरत् किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर का अध्ययन

अजीत कुमार यादव
शोधार्थी,
शिक्षा संकाय विभाग,
आर0बी0एस0 कालेज,
आगरा

सारांश

शिक्षा राष्ट्र निर्माण की कुंजी है और मानव निर्माण की आधारशिला भी है। मनुष्य धीरे–धीरे विकास क्रम की तीसरी अवस्था ''किशोरावस्था'' में पहुंचता है यह अवस्था बहुत ही तूफानी एवं संवेगात्मक होती है ऐसी अवस्था में अक्सर यह देखा गया है कि किशोर–किशोरियों में समायोजन की स्थिति कमजोर हो जाती है जिससे उनका स्व समायोजन, समूह समायोजन, विद्यालयी समायोजन कमजोर हो जाता है और यह देखा गया है कि एकल शिक्षण संस्थाओं सह शिक्षण संस्थाओं का भी प्रभाव समायोजन पर पड़ता है। इस शोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एकल व सहशिक्षण के किशोर–किशोरियों के समायोजन को जानने का प्रयास किया गया है और उन्हें कुसमायोजित होने से बचाने के लिए सुझाव प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : समायोजन, उच्च माध्यमिक, किशोर–किशोरिया, समायोजन, कुसमायोजन।

प्रस्तावना

कोई भी देश, समाज, जाति या राष्ट्र अपने सदस्य में निहित प्रतिभाओं का समुचित रूप से विकास कर जितना अधिक उपयोग करने में सक्षम है, वह उतना ही अधिक समुन्नत, समृद्ध सुदृढ़ होता है, यदि वह अपनी प्रतिभाओं का उपयोग नहीं कर पाता तो वह अवनति के मार्ग पर प्रशस्त हो जाता है। अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें प्रतिभावान युवाओं में शिक्षा के अवसरों की समानता प्रदान की जाये तथा शिक्षा का प्रयोग अधिकाधिक प्रतिभाओं का विकास करने और राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करने के लिए किया जा सके। चूंकि समाज का निर्माण उसके प्रत्येक सदस्य से होता है, अतः शिक्षा भी समाज में प्रत्येक के लिए होनी चाहिए जिसमें बालकों के साथ बालिकाएं भी आती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा का विस्तार हुआ और उसके विस्तार के साथ–साथ उसकी व्यापकता में भी वृद्धि हुई है। कभी शिक्षा का स्वरूप एक निश्चित सीमा तक ही था, शिक्षा के एक अंश में ही उसका प्रसार होता था परन्तु जब से शिक्षा का स्वरूप आधुनिक हुआ है शिक्षा की व्यापकता में बढ़ोत्तरी हुई है। शिक्षा के इस व्यापीकरण के कारण इसमें विरलीकरण भी आया है अर्थात् जो शिक्षा पहले कुछ ही लोगों तक सीमित थी वह अब सभी को उपलब्ध होने लगी है। शिक्षा सुधारों के क्रमिक दौर को पार करते हुये नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अन्तर्गत विभिन्न स्तरों पर शिक्षा का पुनर्गठन किया गया है। इसी के अनुसार सभी बालकों एवं बालिकाओं की उनकी सुविधा के अनुसार अवसर प्रदान करते हुये, अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराकर अधिक तेजी से आगे बढ़ने के अवसर देना चाहिए इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए देश के सभी भागों में एक निश्चित ढांचे पर गति प्रदान करने के लिए बालक एवं बालिकाओं के लिए उनकी मानसिकता व उनकी सुविधा के अनुसार एकल शिक्षण एवं सहशिक्षण संस्थानों की स्थापना की अनुशंसा की गई है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

भारतीय विद्यालयों में शिक्षा का औपचारिक आरम्भ पहली कक्षा से होता है और क्रमशः कक्षा नौ व दस की माध्यमिक स्तर की तथा ग्यारहवी एवं बारहवीं कक्षाएं उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाएं होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर–किशोरियों के समायोजन स्तर का अध्ययन किया जा रहा है जिसकी आवश्यकता एवं महत्व अपरिहार्य है। जैविक विकास की कई अवस्था से गुजरते हुये मानव अपने जीवन की तीसरी सीढ़ी लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण सीढ़ी ''किशोरावस्था' में प्रवेश करता है। किशोरावस्था, बाल्यावस्था

तथा युवावस्था के मध्य की अवस्था है इसे संधिकाल (Transitional Period) भी कहते हैं। इस अवस्था में प्रवेश करने पर बाल्यावस्था में अर्जित स्थिरता पुनः अस्थिरता में बदलने लगती है और तनाव, आक्रोश, झंझावत तीव्रता, आक्रमकता व्याप्त होने लगती है इसलिए स्टेनले हाल ने कहा है कि ''किशोरावस्था बड़े संघर्ष तनाव तूफान तथा विरोध की अवस्था है'' इस अवस्था में उर्जा का प्रवाह तेज गति से होता है और यदि इस ऊर्जा का सही समय और सही दिशा में प्रयोग किया जाये तो उन्हें समाज के प्रति एक जिम्मेदार व उपयोगी नागरिक बनाया जा सकता है, और भारत जेसे प्रजातांत्रिक देश में यह उत्तरदायित्व और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् किशोरों एवं किशोरियों के समायोजन स्तर की तुलना करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् किशोरों एवं किशोरियों के समायोजन स्तर की तुलना करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर सह शिक्षण एवं एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् किशोरों के समायोजन स्तर का तुलना करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर सह शिक्षण एवं एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् किशोरियों के समायोजन स्तर की तुलना करना।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण

प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित कुछ प्रमुख शोध–

जरीन, एम0 के0 एवं वी0 एम0 वत्सला (2011) ''स्टडी एडजस्टमेण्ट प्राब्लम टाईम मैनेजमेण्ट इफेक्ट ऑफ पैरेण्ट्स सोसियो–इकोनोमिक एण्ड एजुकेशनल स्टेटस एण्ड स्टूडेन्ट्स अचीवमेन्ट'' में निष्कर्ष निकाला की आर्थिक सामाजिक स्तर समायोजन पर प्रभाव डालता है।

नजमा उनिसा (2011) ''अकेडमिक एडजस्टमेंट इन स्कूल'' में पाया कि कक्षा सम्बन्ध और व्यक्तिगत समायोजन में नजदीकी होती है जो कि इसके व्यक्तिगत व्यवहार पर निर्भर करता है।

कौर (2012)''विद्यालयी विद्यार्थियों में समायोजन'' के अध्ययन में पाया कि महिला और पुरूष स्कूली छात्र ज्यादा अलग व्यवहार प्रदर्शित करते हैं और शहरी छात्र ज्यादा समायोजित हे ग्रामीण विद्यार्थियों से।

शर्मा मनोज (2013) ने अपने अध्ययन ''अ स्टडी रिलेशनशिप ऑफ इमोशनल इण्टेलीजेन्स विथ एडजस्टमेण्ट, स्ट्रस एण्ड एचीवमेण्ट एमंग सीनियर सेकण्ड्री स्टूडेण्ट'' में उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों में कुसमायोजन, को भावनात्मक लगाव से दूर किया जा सकता है।

चौधरी, पूनम (2015) ने अपने शोध ''सोसल मेच्योरिटी एण्ड शोसल जजमेन्ट ऑफ एडोलसेन्स विथ रेस्पेक्ट टू देयर होम एण्ड स्कूल एनवायरमेण्ट'' में पाया की किशोरावस्था में सामाजिक समायोजन एवं विद्यालयी समायोजन घर के वातावरण पर निर्भर करता है।

पांयरो, गुलिया; डेल पीटर; रेमरसन; ली सा मैरी; मिल एलिनों (2016) में अपने लेख पत्र ''सोशल डेड्रीमिंग एण्ड एडजस्टमेन्ट ऐन ऐक्सपीरियन्स–सेम्पलिंग स्टडी ऑफ सोसियो इमोशनल ऐडाम्पटेशन ड्यूरिंग अ लाइफ'' में बताया कि समायोजन की विभिन्न दशायें एवं प्रक्रियायें क्या होती है।

समायोजन मानवीय जीवन का आधार पक्ष हे और इसी के आधार खंडों पर जीवन के भवन रूपी इमारत का निर्माण होता है इसलिए इसमें किसी भी कड़ी को छोड़ा नहीं जा सकता अतः उपर्युक्त कुछ शोध के पुनरावलोकन करने एवं सूक्ष्म अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि किशोर–किशोरियों के विद्यालयी समायोजन को ओर अधिक बढ़ाने के लिए हमें उन्हें प्राथमिक स्तर से यौन शिक्षा, जननांकी शिक्षा स्वास्थ्य शिक्षा में निपुण करना होगा जिससे किशोरावस्था में आते–आते इन दोनो के मध्य सहसम्बन्ध को बढ़ाया जा सके। जिससे एक नव सृजन नव निर्माण संभव हो सके। किशोरावस्था में तनाव को दूर करने के लिये व्यवसायिक पाठ्यक्रमों एवं अनुवर्ती सेवाओं को भी बढ़ावा देना होगा और इस क्षेत्र में भी हमें व्यापक शोध करने की जरूरत है।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

मुख्यतः इन चारों उद्देश्यों की एक–एक शून्य परिकल्पना बनाई गयी है।

H_{01} उच्च माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{02} उच्च माध्यमिक स्तर पर एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{03} उच्च माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षण एवं एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{04} उच्च माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षण एवं एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर किशोरियों के समायोजन स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि

वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रयुक्त अनुसंधान में किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध में जिला आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) की सदर तहसील के शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि के माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों को चुना गया।

शोध में चर

सम्बन्धित शोध में दो चर है आश्रित एवं स्वतंत्र, आश्रित चर समायोजन, स्वतंत्र चर में माध्यमिक स्तर के किशोर एवं किशोरी।

समष्टि/जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आजमगढ़ शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के अनुदान प्राप्त और निजी विद्यालयों के शिक्षार्थियों को समष्टि में रखा गया है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में किशोर किशोरियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये श्रीमती रागिनी दुबे 1994 की किशोर समायोजन मापनी का प्रयोग

किया गया है जो 13 से 22 वर्ष की आयु के किशोरों पर प्रशासित किया जा सकता है। इस मापनी में कुल 80 प्रश्न है जो समायोजन के 3 बीमाओं स्वसमायोजन, समन्वय समूह समायोजन और विद्यालय समायोजन को मापता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है और उद्देश्यों के अनुसार आजमगढ़ जिले के सदर तहसील से 3 राजकीय और 3 गैर राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 300 किशोर किशोरियों को न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1.1

उच्च माध्यमिक स्तर पर सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के तुलनात्मक समायोजन स्तर के आंकड़े

अभियोग्यता	सह–शिक्षण संस्थाओं के किशोर $N_1 = 50$		सह–शिक्षण संस्थाओं की किशोरी $N_2 = 50$		Dm	SE_{DM}	C.R.
	Mean	S.D.	Mean	S.D.			
समायोजन क्षमता	58	6.5	54.6	8.5	3.5	1.46	2.33

*सार्थकता के 0.05 स्तर पर C.R. का मान = 1.98

क्योंकि t या CR का परिगणितमान 2.33 है जो कि द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 स्तर पर सारणीय का मान 1.98 से अधिक है 0.05 स्तर पर t का परिगणित मान सार्थक है। अतः शोध परिकलपना H_1 स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना $H0_1$ अस्वीकृत की जाती है।

अतः सारणीय मान से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन में सार्थक अन्तर होता है।

तालिका 1.2

उच्च माध्यमिक स्तर पर एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के तुलनात्मक समायोजन स्तर के आंकड़े

अभियोग्यता	एकल शिक्षण संस्थाओं के किशोर $N_1 = 100$		सह–शिक्षण संस्थाओं की किशोरी $N_2 = 100$		Dm	SE_{DM}	C.R.
	Mean	S.D.	Mean	S.D.			
समायोजन क्षमता	51.35	8.65	50.3	8.4	1.05	3.81	0.276

0.05 सार्थकता स्तर पर C.R. का मान = 1.98

क्योंकि t का परिगणितमान 0.276 है जो कि द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 स्तर पर सारणीय का मान 1.98 से कम है 0.05 स्तर पर t का परिगणित मान असार्थक है। अतः शोध परिकल्पना H_2 अस्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना $H0_1$ अस्वीकृत की जाती है।

अतः सारणीय मान से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा और दोनों समूहों के माध्यमानों में अवलोकित अन्तर प्रतिचयन त्रुटि के कारण है।

तालिका 1.3

उच्च माध्यमिक स्तर के सह शिक्षण एवं एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोरों के तुलनात्मक समायोजन स्तर के आंकड़े

अभियोग्यता	एकल शिक्षण संस्थाओं के किशोर $N_1 = 50$		एकल शिक्षण संस्थाओं की किशोरी $N_2 = 100$		Dm	SE_{DM}	C.R.
	Mean	S.D.	Mean	S.D.			
समायोजन क्षमता	58	6.5	51.35	8.65	8.65	2.89	2.3

क्योंकि t का परिगणितमान 2.3 है जो कि द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 स्तर पर सारणीय का मान 1.58 से अधिक है 0.05 स्तर पर t का परिगणित मान असार्थक है। अतः शोध परिकल्पना H_3 स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना $H0_3$ अस्वीकृत की जाती है।

अतः सारणीय मान से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षण एवं एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होगा।

तालिका 1.4

उच्च माध्यमिक स्तर के सह शिक्षण एवं एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोरियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा

अभियोग्यता	सह–शिक्षण संस्थाओं के किशोर $N_1 = 50$		एकल शिक्षण संस्थाओं की किशोरी $N_2 = 100$		Dm	SE_{DM}	C.R.
	Mean	S.D.	Mean	S.D.			
समायोजन क्षमता	54.6	8.05	50.3	8.4	4.3	2.89	1.49

क्योंकि t का परिगणितमान 1.49 है जो कि द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 स्तर पर सारणीय का मान 1.98 से कम है 0.05 स्तर पर t का मान असार्थक है। अतः शोध परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना $H0_4$ स्वीकृत होती है।

अतः सारणीय मान से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षण एवं एकल शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोरियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

निष्कर्ष

सम्पूर्ण अध्ययन के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन में सार्थक अन्तर है और किशोर चाहे वह सह शिक्षण का हो या एकल शिक्षण संस्थान का उसके समायोजन में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सुझाव

शिक्षा का दायित्व विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना होता है। यह सम्पूर्ण विकास व्यक्ति की समायोजन क्षमता पर निर्भर करता है। अतः शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि उसके माध्यम से विद्यार्थियों में समायोजन की क्षमता का विकास किया जा सके।

1. अभिभावकों को छात्रों पर शिक्षा जबरदस्ती थोपनी नहीं चाहिये।
2. विद्यार्थियों में गुरू शिष्य परम्परा को और सुदृढ़ करना होगा।
3. विद्यार्थियों में समाजिकता का विकास कर उन्हें समायोजित करना होगा।
4. विद्यार्थियों में प्राचीन मूल्यों को बढ़ावा देना होगा जिससे वह श्रेष्ठ मानव के रूप में विकसित हो सके।
5. यह शोध समाज के अन्य क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल, जे0सी0 (2005), शैक्षिक तकनीकी तथा प्रबन्धन के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।*
2. *अस्थाना, वी0एस0 (2005) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।*
3. *मदान, पी0 (2008) शोध पत्र, सह शिक्षा तथा एकल शिक्षा के किशोरावस्था के छात्र छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन : शिक्षा चिंतन (2) (3)*
4. *वी0 श्री विद्या, पी0वी0 खड़े, ए0 आर0 एस0 भट्ट (2012) एडजेस्टमेन्ट प्राबलम इन सेण्ट्रोल एण्ड नवोदय स्टूडेन्ट्स, साइकोलिंगुवा, वाल्यूम 42(2), पृष्ठ 159–161*
5. *कौर, जस्सी (2012) एडजस्टमेन्ट एमंग स्टूडेन्ट, साइकोलिंगुवा, वाल्यूम 42(2), पृष्ठ 155–157*
6. *सिंह तीरथ, संदीप पन्नू (2011), एडजस्टमेन्ट एण्ड जेन्डर ऑन एकेडमिक एचीवमेन्ट, साइकोलिगुवावाल्यूम 41(2) पृष्ठ 143–148*
7. *प्रियदर्शी एण्ड विभा रानी शर्मा (2011), कम्पेरिजन ऑफ चिल्ड्रेन एडजस्टमेन्ट प्राब्लम बिगनिंग टू एल्कोहलिक एण्ड नान एल्कोहलिक पैरेन्ट्स, साइकोलिंगुवा 41(2) पृष्ठ 195–197*
8. *पाठक, पी0डी0 (2007), भारतीय शिक्षा और उनकी समस्यायें, अग्रवाल पब्लिकेशनः आगरा।*
9. *पंवार, एस0 एवं उनियाल, एन0पी0 (2008) उच्च प्राथमिक स्तर के बालक बालिकाओं के समायोजन एवं माता–पिता का उनके प्रति व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन, प्राथमिक शिक्षक, 5(8) पृष्ठ 55–56*
10. *मंगल, एस0 के0 (2018), शिक्षा मनोविज्ञान; Delhi, PHI Learning Pvt. Ltd.*
11. *Gupta (2016), Psychological perspectives at Education, Allahabad: Sharda Book Depo.*
12. *गुप्ता, एस0 पी0 एवं अल्का गुप्ता (2015), शिक्षाशास्त्र के संदर्भ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन*
13. *गुप्ता, मोतीलाल (2013), भारत में समाज, जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
14. *सारस्वत, मालती (2017), शिक्षा मनोविज्ञान रूपरेखा, इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन।*

Websites

15. *www.mayoclini.org.retrived2018-02-26*
16. *www.mayoclinic.retrived2dec2016*
17. *htt://hdl.handle.net/10603/8395*
18. *htt://hdlihandle.net/10603/113000*
19. *http://hdl.handle.net/10603/115489*
20. *http://hdl.handle.net/10603/117869*